3

''क्या तू सचमुच चंगा होना चाहता है?''

(यूहन्ना 5:1-16)

यूहन्ना 5 में यीशु ने एक अजीब प्रश्न पूछा था। यीशु ने एक बीमार आदमी से पूछा, ''तू चंगा होना चाहता है?'' (आयत 6)। आयत 5 से पता चलता है कि यह आदमी पिछले अड़तीस वर्ष से बीमार था, जिस कारण यीशु ने उससे पूछा कि क्या वह सचमुच चंगा होना चाहता है!

पहली नज़र में तो यह प्रश्न बिल्कुल वैसे ही बेतुका लगता है, जैसे कई बार एक्सीडेंट हो जाने के बाद पूछा जाता है। एक आदमी बिल्कुल पिचकी हुई एक कार के पास जाता है। कार में एक आदमी है, जिसकी हालत बहुत नाज़ुक है। उसके सिर पर लगी चोटों में से खून बह रहा है, उसकी हड्डियां टूट कर कपड़ों में से बाहर आ गई हैं। वह आदमी पूछता है, ''तुम्हें चोट तो नहीं लगी?'' एक स्त्री अस्पताल की ओर भागती जा रही है। उसके एक साथी के सिर से पैरों तक पट्टियां बन्धी हुई हैं। जिस कारण उसकी शक्ल बिगड़ गई है; उसके शरीर में बहुत सारी नलियां और पाइपें लगी हुई हैं। इसी बीच वह औरत अपने घायल साथी से पूछती है, ''दर्द ज़्यादा तो नहीं हो रहा है?''

इस उदाहरण को और निजी बनाने के लिए, मान लें कि आपकी तबीयत बड़ी खराब है और कोई आ कर पूछता है, ''आप चंगा होना चाहोगे?'' या मान लें कि कोई किसी ऐसे व्यक्ति का नाम लेता है, जिसके साथ आपकी नाराज़गी थी और पूछता है, ''आप उसके साथ सुलह करनी चाहोगे?'' या मान लें कि आपकी पत्नी के साथ या परिवार में कोई गड़बड़ है और कोई आप से पूछता है, ''अपनी पत्नी के साथ या परिवार के साथ सुलह करनी चाहोगे?'' या आप किसी अपराध के बोझ तले दबे हैं और कोई आप से पूछता है, ''आप इससे छुटकारा पाना चाहेंगे?''

आपकी पहली प्रतिक्रिया शायद यही होगी, ''कितना अजीब प्रश्न है! भला इसमें कौन सी पूछने वाली बात है कि मैं चंगा होना चाहता हूं (या लोगों के साथ या अपनी पत्नी के साथ या अपने परिवार के साथ मधुर सम्बन्ध चाहता हूं या पाप से छुटकारा चाहता हूं)। यह पूछना ही कितना बेतुका लगता है!'' हम सब यही चाहते हैं!... है कि नहीं?

यूहन्ना 5:1-16 का अध्ययन करते हुए इन सब प्रश्नों को ध्यान में रखें।

यीशु ने गलील में अपनी सेवकाई आरम्भ कर दी थी। इस सेवकाई की एक विशेष बात बीमारों की चंगाई थी। लोगों को वचन बताते हुए यीशु उन्हें चंगा भी करता था, जिससे दो बातें होतीं: (1) भीड़ इकट्ठी होने लगी और (2) विरोध बढ़ने लगा था। इस पाठ में हम चंगाई की एक घटना तथा उससे उठने वाले विरोध का अध्ययन करेंगे। इस कहानी को पढ़ते हुए हम यीशु

द्वारा पूछे गए अजीब प्रश्न, ''क्या तू चंगा होना चाहता है?'' पर विचार करेंगे।

यीशु ने तालाब के किनारे एक आदमी को चंगा किया

पहले बैतहसदा के तालाब के पास आदमी को चंगाई मिलती हुई देखते हैं। मैं यह सुझाव देना चाहूंगा कि असल में यह तिहरी चंगाई थी।

देह की चंगाई (यूहन्ना 5:1-6)

अध्याय 5 आरम्भ होता है, ''इन बातों के पीछे यहूदियों का एक पर्व हुआ और यीशु यरूशलेम को गया'' (आयत 1)। क्योंकि, ''पर्व'' के बजाय यह ''एक पर्व''[1] था। जिसका अर्थ यहूदियों के छोटे त्यौहारों में से कोई हो सकता है, जिसमें भाग लेना यहूदी पुरुषों के लिए आवश्यक नहीं था। आज के कुछ लोगों के विपरीत, जो आराधना में आवश्यक होने पर जाते हैं, यीशु को आराधना में जाना अच्छा लगता था![2]

''यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है, जो इब्रानी भाषा में बैतहसदा कहलाता है, और उसके पांच ओसारे हैं'' (आयत 2)। ''फाटक'' शब्द इटैलिक किया गया है, जो यह संकेत देता है कि यह शब्द अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। मूल धर्म शास्त्र में ''भेड़ों की *वस्तु* के पास'' है।[3] ''भेड़ों की वस्तु'' सम्भवतया भेड़ों का फाटक था, जिसमें से बलि की जाने वाली भेड़ों को ले जाया जाता था।

जिस तालाब का उल्लेख यहां है, वह आज भी है। ''बैतहसदा'' का अर्थ ''करुणा का घर'' है। ''पांच ओसारे''[4] तालाब के किनारे काफ़ी चौड़ी जगह थी।

अगला दृश्य कंपकंपी लगा देने वाला है: ''उन [ओसारों] में बहुत से बीमार, अन्धे, लंगड़े और सूखे अंग वाले पड़े रहते थे'' (आयत 3)। वहां से आती दुर्गन्ध सिर चकरा देने वाली और दृश्य बहुत ही दुखी करने वाला होगा। अलग-अलग तरह के बीमार, उनका चिल्लाना, वहां की दुर्गन्ध, कमज़ोर दिल का आदमी तो वहां ठहर भी नहीं सकता होगा।

यहां पर KJV (और हिन्दी-अनुवादक) बाइबल में ये शब्द जोड़े गए हैं:

> ... पानी के हिलने की आशा में पड़े रहते थे क्योंकि नियुक्त समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे। पानी हिलते ही जो कोई पहले उतरता वह चंगा हो जाता था, चाहे उसे कोई भी बीमारी क्यों न हो (आयतें 3, 4; KJV)।

स्पष्ट रूप से यह व्याख्या मूल धर्म शास्त्र में नहीं थी, परन्तु एक प्राचीन शास्त्री की व्याख्या में थी, जिसे बाइबल में लिख दिया गया।[5] इन शब्दों में एक पुराने अन्धविश्वास का पता चलता है, जिस कारण लोग इस जगह पर आते थे (देखें आयत 7)। यह तालाब जो बैतहसदा के नाम से प्रसिद्ध था, के बारे में कहा जाता था कि इसके तल के नीचे पानी के सोते हैं। समय-समय पर पानी के बुलबुले ऊपर उठते होंगे। स्पष्ट है कि लोग पानी के इस तरह हिलने को स्वर्गदूतों द्वारा हिलाया जाना मानते थे।

''और वहां एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था'' (आयत 5)। यह कहना

गलत नहीं होगा कि पूरा जीवन नहीं तो अपने आधे जीवन का अधिकतर समय वह व्यक्ति बीमार ही रहा। जैसा कि हम आयत 7 में देखेंगे कि वह शारीरिक रूप से असमर्थ था और स्वयं पानी में नहीं उतर सकता था। शायद कमज़ोर, अपंग या पक्षाघात से ग्रस्त था।

आयत 6 यही पृष्ठभूमि बताती है: ''यीशु ने उसे पड़े हुए देखकर और जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा हुआ है, उससे पूछा क्या तू चंगा होना चाहता है?'' यीशु इस कुण्ड पर जहां बहुत सारे बीमार लोग पड़े रहते थे, किसी विशेष उद्देश्य से आया था। यह स्पष्ट है कि वह नगर के दर्शनीय स्थलों को देखने नहीं आया था। बेशक, लोगों के प्रति करुणा के कारण वह यहां आया था।

कुण्ड पर पहुंच कर यीशु ने अड़तीस वर्ष से वहां बीमार पड़े आदमी को देखा। यीशु ने इस मनुष्य को चंगा करने का निर्णय क्यों लिया? स्पष्टतया वहां इतने बीमार पड़े लोगों में से यीशु ने इसे ही चंगा किया। क्या उसे केवल इसलिए चंगा किया गया कि हर कोई देख कर कह सके कि वह सचमुच चंगा हुआ है? या इसलिए कि यह बिल्कुल निराश था और यीशु निराश लोगों की आशा, बेसहारों का सहारा था? या इसलिए कि उसका कोई साथी नहीं था (आयत 7)[6] और यीशु मित्रहीन लोगों का मित्र था? (यीशु शायद उस बालक की तरह है, जिसे पिल्लों के झुण्ड में से एक पिल्ला उठाने के लिए कहा गया तो उसने वह सबसे छोटा पिल्ला उठाया, जिसे बड़े और शक्तिशाली पिल्ले इधर-उधर धकेल रहे थे।)

जो भी कारण हो, यीशु ने यह जानकर कि ''वह बहुत लम्बे समय से बीमार है'' (पूरे अड़तीस वर्ष से) उसकी ओर दृष्टि की और पूछा, ''क्या तू चंगा होना चाहता है?''

आइए थोड़ी देर के लिए इस प्रश्न पर विचार करें। यीशु ने यह अजीब प्रश्न क्यों पूछा?

जरा रुक कर विचार करें: अड़तीस वर्ष बीमार रहना कठिनाई की बात तो है, परन्तु एक ओर इससे काफ़ी आसानी भी थी? कोई उसे हर रोज़ इस कुण्ड के किनारे छोड़ देता होगा। दिन भर वह बिना किसी ज़िम्मेदारी के वहां पड़ा रहता होगा। उसने भीख मांग कर कुछ पैसे भी जमा किए होंगे। उसके लिए निर्णय कोई और लेता जबकि काम कोई और करता था। शायद उसने हालात से समझौता कर लिया था और अब इसी तरह जीने का मन बना लिया था।

दूसरी ओर, यदि वह अचानक चंगा हो जाता तो क्या होना था? उसे निर्वाह के लिए काम करना पड़ता। अड़तीस साल तक कुछ न करने के कारण अर्थात बिना कोई काम सीखे नौकरी ढूंढ़ने में उसे कितनी परेशानी होती। उस पर ज़िम्मेदारी और जवाबदेही भी झेलनी पड़ती। उसे काम-धन्धा करना पड़ता, मुकाबला करना पड़ता तथा स्वयं निर्णय लेना पड़ता। इसके (अलावा) साथ उसे असफल होने की सम्भावना भी सहनी पड़नी थी।

यीशु उससे पूछ रहा था कि क्या ''तू सचमुच चाहता है कि चंगा हो जाए? क्या तू इस चंगा के लिए तैयार है?''

बीमार होना कई लोगों को रास आ जाता है। आप ने एक पुरानी कहावत सुनी होगी, फलां व्यक्ति को तो ''बीमारी *रास आ गई* है।'' कइयों को तो बीमार पड़ना अच्छा लगता है। कइयों को दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना अच्छा लगता है। कइयों को तो काम न करने का बहाना मिल जाता है। कई अपनी बीमारी का इस्तेमाल दूसरों को उंगलियों पर नचाने और घुमाने के लिए करते हैं।

अब आप को यीशु का प्रश्न उतना अजीब नहीं लगेगा!

मन की चंगाई (यूहन्ना 5:7-13)

आइए हम इस प्रश्न की गहराई में चलते हैं। यीशु हर किसी को जानता था, वह जानता था कि किसके मन में क्या है (तुलना करें यूहन्ना 2:25)। इसलिए यीशु ने यह प्रश्न, उत्तर लेने के लिए नहीं पूछा। बल्कि इसलिए पूछा कि उस आदमी को अपने अन्दर झांकने का अवसर मिले![7] यीशु की दिलचस्पी उसकी देह को चंगा करना ही नहीं था; वह तो उसके मन की चंगाई भी चाहता था। वह चाहता था कि उसके विचार भी स्वस्थ हों।

उस आदमी ने यीशु के प्रश्न को डांट समझा। स्पष्टतया उसने इस प्रश्न को उसी अर्थ में लिया कि ''यदि तू चंगा होना चाहता है, तो अब तक हुआ क्यों नहीं?'' जब पानी हिलाया जाता है, तो तू भाग कर कुण्ड के पास क्यों नहीं चला जाता ताकि सब से पहले पहुंच सके? उस रोगी व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''हे प्रभु! मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, जो जब पानी हिलाया जाए तो मुझे कुण्ड में उतारे; परन्तु मेरे पहुंचते-पहुंचते दूसरा मुझ से पहले उतर जाता है'' (आयत 7)।[8]

यह कुण्ड काफ़ी गहरा है और इसके किसी भी किनारे पर कम पानी नहीं है। पानी तक जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं। जो आदमी चल नहीं सकता उसके लिए कुण्ड में उतरने के लिए किसी की सहायता लेना आवश्यक होता है। पानी हिलने पर ''हर किसी को अपनी ही'' पड़ी होती है और इस बेचारे को मौका मिलने की कोई सम्भावना नहीं थी!

यीशु के प्रश्न का उत्तर ''हां'' या ''ना'' में देने के बजाय वह कह रहा था, ''अब तक बीमार रहने में मेरा कोई दोष नहीं है! पानी में ले जाने के लिए मेरा कोई सहायक नहीं है।'' जब समस्याएं आती हैं तो उनमें हमारा कोई दोष नहीं होता, या होता है? आमतौर पर हमें लगता है कि किसी ने हमारी यह हालत की है। शायद इस बीमार आदमी की तरह हमें भी दिमाग के इलाज की आवश्यकता है।

यीशु इस मनुष्य को आसानी से जाने नहीं देना चाहता था। वह उसकी कई बीमारियों को चंगा करना चाहता था, क्योंकि शरीर के रोग के अलावा उसे मन का रोग भी था। ''यीशु ने उससे कहा, उठ अपनी खाट उठा और चल फिर'' (आयत 8)। अड़तीस साल तक चारपाई ने उसे उठाया हुआ था, अब यीशु ने उसे अपनी चारपाई उठाने के लिए कहा।

जरा रुकें! इस व्यक्ति ने कहा कि वह यह काम नहीं कर सकता। यदि वह चलने के योग्य होता तो सब से पहले पानी में उतर जाता। वास्तव में यदि वह चलने के योग्य होता तो वह उस कुण्ड के पास ही न होता। यीशु उसे एक असम्भव काम करने के लिए कह रहा था। वह उससे पूछ रहा था, ''क्या चल पाने की तेरी इतनी ही *इच्छा* है?''

यीशु में कोई बात थी, जिससे इस मनुष्य का ध्यान उसकी ओर खिंच गया था। ऐसा भी नहीं कि वह यीशु को जानता था या उसको यह विश्वास हो गया था कि यीशु उसे चंगा कर सकता है। जैसा कि हम आयत 13 में देखेंगे कि उस मनुष्य के ख्याल में भी न था कि यीशु कौन है? स्पष्ट है कि उस ने कोशिश करने का मन बना लिया! ''वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा'' (आयत 9)। यीशु द्वारा की गई शेष चंगाइयों की तरह यह चंगाई भी सम्पूर्ण और (जैसा हम देखेंगे) यकीन दिलाने वाली थी।

मुझे कई बार चोटें लगी हैं, जिनसे मेरे शरीर के उन अंगों के साथ मैं कई महीनों तक काम नहीं कर पाया था, और मैं यह बता सकता हूं कि मांसपेशियों के कमज़ोर होने, जोड़ों के काम न करने आदि का क्या असर होता है। अड़तीस साल तक शरीर के कई अंगों का इस्तेमाल न करने की कल्पना करें कि उसके शरीर की क्या स्थिति होगी! जब यीशु ने उस आदमी को चंगा किया तो देखने वालों ने देखा होगा कि उसका शरीर फिर से ''भर गया'' और वह स्वस्थ हो गया है।

फिर यूहन्ना ने यह संक्षिप्त सी टिप्पणी जोड़ी: ''वह सब्त का दिन था'' (आयत 9)। क्या यीशु ने सब्त के दिन इस आदमी को अपने विरोधियों से वैर मोल लेने के लिए चंगा किया था? एक बार उसने ऐसे ही किया था (मत्ती 12:1-14)। क्या सब्त के दिन यीशु द्वारा चंगाई मात्र संयोग था? मैं फिर कहता हूं, कि हो सकता है। सोच-समझ कर हो या संयोग से, यूहन्ना हमें यह बताना चाहता था कि वह सब्त का दिन था, क्योंकि इससे पता चल जाता है कि आगे की घटनाओं का आधार क्या था।

उस व्यक्ति के खड़ा होकर चलने-फिरने पर कुण्ड के आस-पास के लोगों की उत्तेजना की कल्पना करें! परन्तु वहां मौजूद कुछ लोगों, फरीसियों, धार्मिक अगुओं, परम्परा को जारी रखने वालों को प्रसन्नता नहीं हुई। उनका प्रश्न यह नहीं था कि कोई आश्चर्यकर्म हुआ है, पर उन्हें तो मनुष्यों के अपने बनाए हुए रीति-रिवाज़ों की अधिक चिन्ता थी। ''इसलिए यहूदी उससे जो चंगा हुआ था, कहने लगे, आज तो सब्त का दिन है, तुझे खाट उठाना उचित नहीं'' (आयत 10)। बुरी बात है न? उन्होंने चंगाई की बात की ओर ध्यान नहीं किया। वे तो इस बात से नाराज़ थे कि किसी की बीमारी ठीक क्यों हो गई। उनका कहना था कि ''तू ने हमारी परम्परा को तोड़ा है!''

''सब्त'' शब्द का मूल अर्थ है ''विश्राम।'' संसार की सृष्टि के बाद परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम किया था (उत्पत्ति 2:1-3)। बाद में सातवें दिन का विश्राम, जिसे सब्त कहा जाता था, दस आज्ञाओं में जोड़ा गया (निर्गमन 20:8-11)। यहूदियों के लिए सब्त का दिन विशेष था। यह विश्राम का, आराधना का, परमेश्वर की ओर ध्यान लगाने का, आनन्द करने का दिन था। सब्त का पालन करना सुनिश्चित करने के लिए, परमेश्वर ने इसका उल्लंघन करने पर कई दण्ड ठहरा दिए। गिनती 15 अध्याय में सब्त का दिन लकड़ियां इकट्ठी करने के कारण एक व्यक्ति को पत्थर मार-मार कर मार दिया गया था। नहेम्याह की पुस्तक में, सब्त के दिन कारोबार करने पर कठोर दण्ड दिया गया था।

परमेश्वर के नियम काफ़ी कठोर थे, परन्तु लोग इतने से संतुष्ट नहीं थे। फरीसियों ने नियमों के 23 अध्याय और जोड़ कर सब्त के नियमों को और कठोर कर दिया! उनमें से अधिकतर नियम तो बेतुके थे। उहाहरण के लिए, कोई मनुष्य सब्त के दिन अपनी उंगली का नाखून नहीं चबा सकता था, क्योंकि ऐसा करने को काम करना माना जाता था। मनुष्यों के बनाए कई नियम तो बोझ उठाने से सम्बन्धित थे। रब्बी इस बात पर बहस करते थे कि सब्त के दिन नकली दांत या नकली टांग लगाए जा सकते हैं या नहीं, क्योंकि ये बोझ ही थे। यदि किसी स्त्री ने कपड़े सिले हों और गलती से कपड़े के अन्दर सुई रह गई हो और उसके पति ने सब्त के दिन वे कपड़े पहन लिए हों तो माना जाता था कि सुई का भार उठाने के कारण उसने पाप किया। (ध्यान दें कि ये नियम लोगों द्वारा बनाए गए थे, परमेश्वर की ओर से नहीं थे।[9])

इन नियमों में से एक नियम यूहन्ना 5 वाली स्थिति से सम्बन्धित था। रब्बियों का कहना था

कि व्यक्ति को बिस्तर पर लिटा कर ले जाया जा सकता था, क्योंकि ''बिस्तर तो संयोग था,'' परन्तु खाली चारपाई उठाना गलत है। परन्तु यीशु ने उस आदमी को यही करने के लिए कहा! ''उठ अपनी खाट उठा और चल फिर।''

जब फरीसियों ने कहा, ''आज सब्त का दिन है, तुझे खाट उठाना उचित नहीं'' (आयत 10)। तो उस आदमी का उत्तर था, ''मेरी गलती नहीं है।'' (यीशु को उसने बताया था कि ''न चल पाने में मेरी कोई गलती नहीं है।'' अब उसने फरीसियों को बताया, कि ''चल रहा हूं यह मेरी गलती नहीं है।'') ''परन्तु उसने उन्हें उत्तर दिया, 'जिसने मुझे चंगा किया, उसी ने मुझ से कहा कि अपनी खाट उठा के चल फिर' '' (आयत 11)। दूसरे शब्दों में, ''यदि उस व्यक्ति के पास मुझे चंगाई देने का अधिकार था तो बेशक उसे अपनी चारपाई उठाने के लिए कहने का भी अधिकार था!''

''उन्होंने उससे पूछा, 'वह कौन मनुष्य है? जिसने तुझ से कहा, ''खाट उठा और चल फिर''?' परन्तु जो चंगा हो गया था वह नहीं जानता था कि वह कौन है क्योंकि उस जगह भीड़ होने के कारण यीशु वहां से जा चुका था'' (आयतें 12, 13)। पहली कही गई बात पर ध्यान दें: इस आदमी को कुछ पता नहीं था कि यीशु कौन था! यीशु ने उसे चंगा किया और फिर भीड़ में खो गया।

आत्मा की चंगाई (यूहन्ना 5:14-16)

यीशु ने अभी इस मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ा था। ''इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला (निश्चय ही वह वहां सम्पूर्ण बनाए जाने के लिए परमेश्वर की महिमा करने के लिए था), और [यीशु] ने कहा देख तू चंगा हो गया है;[10] फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े'' (आयत 14)। यीशु द्वारा कही गई ''इससे कोई भारी'' उससे भी कोई बड़ी विपत्ति, बीमारी या नरक की बात हो सकती है। जीवन चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो, नरक की अनन्त आग से अधिक भयानक नहीं हो सकता।

अधिकतर टीकाकार यीशु की बातों को इस बात का संकेत मानते हैं कि उस मनुष्य की पहली बीमारी पहले किए गए किसी पाप का परिणाम थी। हो सकता है। यूहन्ना 9 में यीशु ने ज़ोर देकर कहा कि आवश्यक नहीं कि हर बीमारी का कारण ही हो। फिर भी कुछ रोग ऐसे होते हैं जैसे कि आज के HIV वायरस या एड्स की महामारी से पता चलता है। HIV वायरस हर मनुष्य के अपने पाप का परिणाम नहीं होती, बल्कि यह शारीरिक पाप करने वालों के संक्रमण से हो सकती है।

पर यह भी हो सकता है कि उस मनुष्य के जीवन में पाप और शारीरिक स्थिति में कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध न हो। शायद यीशु उस आदमी की सबसे बड़ी समस्या ही हल करना चाहता था। यीशु की प्राथमिकता आत्मा की चंगाई होती थी न कि देह की चंगाई।[11] (मेरे एक मित्र[12] का सुझाव है कि यीशु ने कहा, ''अब पाप मत करना,'' क्योंकि वह आदमी अड़तीस साल तक कोई बुराई नहीं कर पाया था और अब उसका इरादा हो कि जो कुछ वह बीमार रहते हुए नहीं कर पाया था, वह सब करेगा-इसमें वे सब बातें भी थीं, जो उसे नहीं करनी चाहिए थीं।)

यीशु के शब्द, ''फिर पाप न करना'' का अर्थ चाहे जो भी हो, परन्तु यह सच्चाई स्पष्ट है कि यीशु का ध्यान उसकी आत्मिक चंगाई पर था। यदि केवल उसका शरीर ही चंगा होता, परन्तु

परमेश्वर के साथ उसका सम्बन्ध बिगड़ा रहता तो शारीरिक चंगाई का कोई लाभ नहीं होना था। यीशु का ध्यान उसकी देह पर, उसके मन पर और सबसे अधिक उसकी आत्मा पर था।

आयत 15 का आरम्भ इस कहानी को समेट देता है: ''उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया कि जिसने मुझे चंगा किया वह यीशु है।'' शायद वह आदमी यीशु का भेद लेने की कोशिश कर रहा था ताकि यहूदियों के इस प्रश्न का उत्तर दे सके कि ''वह *कौन*... है, जिसने तुझ से कहा, खाट उठा और चल फिर?'' (आयत 12)। परन्तु मुझे नहीं लगता कि उसके मन में यह बात थी। ध्यान दें कि उसकी गवाही क्या थी। उसने यह नहीं कहा कि उसे अपनी चारपाई उठा कर चलने फिरने के लिए यीशु ने कहा था। परन्तु उसने कहा कि *''जिसने मुझे चंगा किया''* वह यीशु है! अब उसे विश्वास था; इसलिए उसने अपने प्रभु की सामर्थ और *व्यक्ति* की गवाही दी। उस मनुष्य के शरीर तथा मन के साथ-साथ उसकी आत्मा भी चंगी हो गई थी।

यूहन्ना ने यह संपादकीय टिप्पणी देकर इस कहानी को समाप्त किया: ''इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह ऐसे काम सब्त के दिन करता था'' (आयत 16)।

यीशु हम सब को चंगाई दे सकता है

इसके साथ ही कुण्ड के किनारे उस मनुष्य की चंगाई की कहानी यहां पूरी हो जाती है, पर बाइबल की बात अभी खत्म नहीं हुई है। मैं चाहता हूं कि हम उस अवसर पर उपस्थित एक और समूह पर विचार करें। फिर हम सब उसे अपने ऊपर लागू करें।

फरीसियों के लिए प्रश्न

क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि यीशु यहूदी अगुओं को भी पूछ सकता था कि ''क्या तुम सचमुच चंगा होना चाहते हो?'' इस पर विचार करें: यीशु के चेलों के अलावा और किसने यीशु के आश्चर्यकर्मों को देखा और उसकी शिक्षा को सब से अधिक सुना होगा? धर्म गुरुओं, फरीसियों अर्थात उसके आलोचकों ने, जो उसे फंसाने के चक्कर में या उस में कोई न कोई कमी ढूंढ़ने के लिए परछाई की तरह उसके पीछे-पीछे रहते थे। इस कहानी से थोड़ा पहले हम पढ़ रहे थे कि वह खेतों में छिप कर बैठे थे! उन्होंने यीशु के चेलों पर सब्त का नियम तोड़ने का आरोप लगाया था क्योंकि उन्होंने खेतों से बालें तोड़ कर खाई थीं (मत्ती 12:1, 2)।

इन यहूदियों को यीशु से आत्मिक चंगाई पाने का हर सम्भव अवसर मिला। सदियों से यहूदी लोग यीशु के आने की राह देख रहे थे। वे यीशु के आने के विषय में की गई भविष्यवाणियों को जानते थे कि मसीह कैसा होगा और वह क्या करेगा। यीशु ने हर भविष्यवाणी को पूरा किया।

उनका दावा था कि ''हम चाहते हैं कि मसीहा आए! हम चाहते हैं कि वह हमारे लोगों को चंगाई दे!'' यीशु उनसे पूछ सकता था, ''क्या तुम सचमुच चंगा होना चाहते हो?''

यूहन्ना 5 अध्याय के अन्तिम भाग में हम इन यहूदी अगुओं के लिए यीशु का महान संदेश देखते हैं (आयतें 19-47)। इस उपदेश में यीशु ने तीन बड़े दावे किए: (1) वह परमेश्वर के तुल्य था, (2) वह परमेश्वर के काम करता था और, (3) उसमें परमेश्वर की शक्ति थी। उसने आत्मिक जीवन दिया (आयत 21), वह मुर्दों को जिलाएगा (आयतें 28, 29), और सब लोगों का न्याय करेगा (आयतें 22, 23)। उसके संदेश में लाखों करोड़ों लोगों को बचाने के लिए भरपूर

सच्चाई और सबूत थे।

यीशु उनसे पूछ सकता था, ''क्या तुम अपनी सारी आत्मिक बीमारियों से चंगाई नहीं *चाहते*?'' यदि वह उन्हें इस तरह पूछता तो शायद हो सकता था कि यह उत्तर मिलता कि ''हां ... शर्त यह है कि न तो हमें अपनी परम्पराएं और न ही अपनी पिछली सोच बदलनी पड़े।'' यानी ''हमें आवश्यकता तो है परन्तु यदि इसकी कोई कीमत न चुकानी पड़े तो!''

हमारे लिए प्रश्न

यही प्रश्न यदि हम से पूछा जाए तो क्या हम इसे सुनने के लिए तैयार हैं? मैं पहले से बता देता हूं कि यह प्रश्न आप को परेशान कर सकता है? हो सकता है कि ये प्रश्न आप को बेचैन कर दें! (मैं यकीन के साथ कहता हूं, जैसे मेरे पिता जी कहा करते थे कि आप से अधिक इसका कष्ट मुझे होगा!)

आप मोटे हैं? क्या आप सचमुच अपना वज़न कम करना चाहते हैं? यानी आप इसके लिए कम खाना खाने तथा व्यायाम करने की कीमत देने को तैयार हैं? (अपने पास लोगों को खाते देख कर सामने पड़े पसन्दीदा पकवानों को न खाने पर कितना बुरा लगता है!)

क्या आप भी उन लोगों के जैसे नहीं हैं, जिन्हें लगता है कि उन्हें कोई बड़ा रोग तो नहीं है पर सेहत खराब लगती है? क्या आप चंगाई पाना चाहते हैं? उपयुक्त भोजन ले कर और आवश्यक व्यायाम करने के अलावा क्या आप अपने जीवन और अपनी प्राथमिकताओं पर पुनर्विचार करने को तैयार हैं, ताकि आप अपने दिमाग, शरीर और आत्मा को आराम दे सकें। दूसरे शब्दों में, क्या आप चंगा होने के लिए कीमत देने को तैयार हैं?

ऐसा कोई व्यक्ति है, जिससे आपके सम्बन्ध बिगड़े हुए हों? क्या आप सचमुच उस मनुष्य के साथ सम्बन्ध सुधारना चाहते हैं? क्या आप कीमत देने को तैयार हैं? क्या आप अपने अहम को निगल कर यह कहने को तैयार हैं कि ''मुझे क्षमा कर दें''? क्या आप इतने बड़े आदमी हो सकते हैं कि दूसरा चाहे आपके साथ भलाई करे या न करे पर आप अवश्य करेंगे? क्या आप सेवक बनना सीख सकते हैं?

क्या आप सुखी वैवाहिक जीवन या सुखी परिवार चाहते हैं, परन्तु इन सब के लिए अपने आप को बदलना आवश्यक है ... और बदलाव के लिए कष्ट उठाना पड़ता है ... और कष्ट हम उठाना नहीं चाहते।

क्या आप अपने आप को दोषी समझते हैं? क्या आप इस पीड़ा से सचमुच छुटकारा पाना चाहते हैं? क्या आप अपने आप को परमेश्वर के सामने दीन करके अपनी इच्छा पूरी तरह से उसके आगे सौंपने को तैयार हैं? क्या आप जीने के अपने ढंग को बदलना चाहते हैं (बाइबल इसे ''मन फिराना'' कहती है)? यदि आप ने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा (पानी में डुबकी) नहीं लिया है (प्रेरितों के काम 2:38), तो क्या आप लेने के लिए तैयार हैं? यदि आप ने परमेश्वर की सन्तान होकर पाप किया है तो क्या आप अपने आप को परमेश्वर के अनुग्रह के आगे झुकाने को तैयार हैं (1 यूहन्ना 1:9)? यदि अपने कामों से आप के प्रभाव को चोट पहुंची है तो क्या लोगों के सामने अपनी गलती को मान कर नये सिरे से आरम्भ करने के लिए तैयार हैं (याकूब 5:16)? क्या आप कीमत चुकाने को तैयार हैं?

आप की *समस्या* जो भी हो, यीशु आपकी सहायता कर सकता है। यदि आप उसे सहायता करने दें तो, यदि आप कीमत चुकाने को तैयार हैं तो। यीशु की ओर देखें। जो सही है वही करने की कोशिश करें। कुण्ड के किनारे वाले आदमी ने जब कोशिश की, तो यीशु ने उसे खड़ा होने और चलने की शक्ति दी। भरोसा रखो, यीशु आप की हर उस आवश्यकता को पूरा कर सकता है, जो आप स्वयं नहीं कर सकते।

यीशु हमारे शरीरों, मनों और आत्माओं को चंगा कर सकता है।

सारांश

यीशु का ध्यान हमेशा आत्मा पर होता है। उसने मनुष्य से कहा था, ''फिर पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े'' (आयत 14)। यीशु हमारी आत्माओं को अभी चंगाई देना चाहता है। वह हमें उठकर अपने साथ चलने के लिए कहता है। अगर हम चाहें तो वहीं के वहीं रह सकते हैं। जब यीशु ने मनुष्य से कहा, ''उठ, अपनी खाट उठा कर चल फिर'' तब उस मनुष्य के लिए यह करना ज़रूरी नहीं था। उसकी अपनी इच्छा थी। वह चाहता तो वहीं पड़ा रह सकता था। पर अगर वह वहीं पड़ा रहता तो अन्त में कीड़े पड़कर वहीं का वहीं मर जाता। इसी तरह जब यीशु हमें बुलाता है तो उसकी बात मानना हमारी इच्छा पर निर्भर करता है। जिस चारपाई पर हम आज लेटे हैं, हो सकता है कि वह हमें ज्यादा आरामदायक लग रही हो। पर अगर हम उसी पर लेटे रहें तो हम कभी तन्दुरुस्त नहीं हो सकते। फैसला आपके हाथ में है।

परमेश्वर हमारी मदद करे कि हम फरीसियों की तरह न बनें। अपनी परम्पराओं तथा अपनी पिछली सोचों को त्यागने में वह हमारी मदद करे। आइए, हम अपने आपको परमेश्वर के आगे सौंप दें। वह ज़रूर हमें चंगा करेगा।

क्या आप सचमुच चंगा होना चाहते हैं? आपकी प्रतिक्रिया से आपके उत्तर का संकेत मिल जाएगा।

टिप्पणियां

[1]कई *बाइबलों* में ''त्यौहार'' है। ''त्यौहार'' सही है तो यह फसह का त्यौहार ही होगा। [2]कोई कहेगा ''यीशु को गिरजा घर में जाना पसन्द था।'' [3]KJV के अनुवाद में ''भेड़ों की मण्डी'' है। [4]KJV में उन्हें ''porches'' कहा गया है। [5]ये शब्द पूर्ण या आंशिक रूप में कई प्राचीन हस्तलेखों में मिलते हैं, परन्तु अति प्राचीन और विश्वसनीय हस्तलेखों में नहीं। [6]कम से कम उसका ऐसा कोई मित्र नहीं था, जो दिन के समय उसके साथ रहे (आयत 7)। कोई हर रोज़ कुण्ड तक पहुंचने में उसकी सहायता करता होगा। [7]ये बातें कहते हुए यीशु ने भीड़ या अपने आलोचकों को ध्यान में रखा होगा। [8]उस आदमी के उत्तर से यह संकेत मिलता है कि पानी के ''हिलाए जाने'' के विषय में और चंगा करने वाली शक्ति के बारे में कुछ अन्धविश्वास पाया जाता था। [9]पुराना नियम बोझा उठाने के लिए नहीं कहता (यिर्मयाह 17:19-27; नहेम्याह 13:15-19) परन्तु नहेम्याह 13:15 में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि सब्त के दिन कारोबार की बात उनके मन से निकलती नहीं थी। [10]काल के उपयोग से संकेत मिलता है कि यह हाल स्थाई था।

[11]इस पुस्तक में पहले आया पाठ ''यीशु ही उत्तर है'' देखें। [12]डेविड डेनमन।